भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

केन्द्रीय कमेटी

प्रेस वक्तव्य

10 नवम्बर 2018

भा.क.पा. (माओवादी) के महासचिव कामरेड गणपति अपने जिम्मेदारियों से स्वेच्छा से हटने के कारण कामरेड बसवराजू को केंद्रीय कमेटी ने नया महासचिव के रूप में चुन लिया

कामरेड गणपति पिछले कुछ सालों से अपनी बढ़ती अस्वस्थता और बढ़ते उम्र को ध्यान में रखने के साथ-साथ केंद्रीय कमेटी को और मजबूत करने के लक्ष्य से दूरदृष्टि से खुद महासचिव से स्वेच्छा से हटकर अपनी स्थान में दूसरे कामरेड को महासचिव पद में चुनने का प्रस्ताव लाये। इस प्रस्ताव को केंद्रीय कमेटी की 5वीं बैठक ने बारिकी से चर्चा कर अनुमोदन किया और उनके स्थान पर कामरेड बसवराजू (नंबाल्ला केशव राव) को नए महासचिव के रूप में चुन लिया।

जून 1992 में कामरेड गणपति भाकपा (माले) (पीपुल्सवार) के महासचिव बन गए। उस समय पार्टी बहुत-ही कठिन परिस्थितियों का सामना कर रहा था। 1991 से आंध्रप्रदेश की सरकार ने पार्टी पर दूसरी पारी की दमन शुरू की। उस समय में सशस्त्र संघर्ष को आगे बढ़ाने के लिए क्या कार्यनीति अपनाया जाये, इस पर पार्टी कई चुनौतियों का सामना कर रही थी। पार्टी द्वारा सामना किए जाने वाले इन चुनौतियों को अपनी कमेटी के साथ हल करना तत्कालीन केंद्रीय कमेटी के सचिव कोण्डापल्ली सीतारामय्या के लिए बस की बात हो गयी। इस तरह की परिस्थितियों में पार्टी द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों को समूचे पार्टी केडरों पर और जनता पर आधारित होकर निपटने के बजाय, कोण्डापल्ली सीतारामय्या के साथ और एक केंद्रीय कमेटी के सदस्य ने साजिशपूर्ण तरीकें अपनाकर पार्टी में आंतरिक संकट का कारण बने। इस अवसरवादी गुट द्वारा पार्टी को विभाजित करने के लिए किए गए कोशिशों को हराने के लिए संचालित सूत्रबद्ध संघर्ष में कुछ अवसरवादियों को छोड़कर समूची पार्टी एकत्र होकर खड़ी हुई। इस अवसर पर केंद्रीय कमेटी के युवा नेतृत्व द्वारा आंतरिक संकट का सामना करने हेतु अपनायी गयी पद्धतियां समूची पार्टी के लिए बड़ी शिक्षा अभियान साबित हुई और पार्टी की कार्यशैली को सुधार लिया। समूची पार्टी के सैद्धांतिक और राजनीतिक स्तर को बढ़ाया। विशेषकर, केंद्रीय कमेटी में सामूहिक नेतृत्व और सामूहिक कामकाज (फंक्शनिंग) का विकास किया। केंद्रीय कमेटी में मौजूद क्रांतिकारी नेतृत्व द्वारा संचालित इस पूरे प्रयास में कामरेड गणपति ने अगली पंक्ति में खड़े होकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाया। इस क्रम में ही समूची पार्टी ने एकजुटता दिखाकर, षड़यंत्रकारियों को हरा दिया और वह जिन सवालों का सामना कर रहा था, जनवादी केंद्रीयता के अंदर उन्हें निपटने के लिए तैयार हो गयी। इस परिस्थिति में ही सामूहिक नेतृत्व के रूप उभरी केंद्रीय कमेटी ने कामरेड गणपति को नए महासचिव के रूप में चुन लिया था।

1995 में हमने अखिल भारतीय विशेष अधिवेशन का आयोजित कर पार्टी लाइन को उन्नत किया। इस अधिवेशन ने नयी केंद्रीय कमेटी को चुन लिया और इस नयी केंद्रीय कमेटी ने कामरेड गणपति को फिर से महासचिव के रूप में चुन लिया। अगस्त 1998 में भाकपा (माले) (पीपुल्सवार) और भाकपा (माले) (पार्टी यूनिटी) का विलय होकर नयी भाकपा (माले) (पीपुल्सवार) गठित हुई। इसके परिणामस्वरूप पार्टी कई राज्यों में विस्तारित होकर अखिल भारतीय चरित्र हासिल किया। इस मौके पर गठित नयी केंद्रीय कमेटी ने भी कामरेड गणपति को महासचिव के रूप में चुन लिया। 2 दिसम्बर 2000 तक हमने सैनिक लाइन को विकसित कर जनमुक्ति छापामार सेना को गठित किए। 2001 में आयोजित पूर्ववर्ती भाकपा (माले) (पीपुल्सवार) की 9वीं कांग्रेस ने पार्टी की राजनीतिक, सैनिक और सांगठनिक लाइन को और संपन्न बनायी। भारत की ठोस परिस्थितियों से दीर्घकालीन जनयुद्ध की रणनीति को लागू करने के तहत इस अधिवेशन ने गुरिल्ला आधार इलकों (बेसों) का निर्माण जैसे नए खोज निकाली। सीएमसी के नेतृत्व में जनमुक्ति छापामार सेना को गठित करने के साथ-साथ जनयुद्ध और राजसत्ता के बीच संबंध पर पार्टी ने जोर दिया। इस मौके पर गठित नयी केंद्रीय कमेटी ने भी कामरेड गणपति को ही महासचिव के रूप में फिर एक बार चुन लिया।

21 सितम्बर 2004 को भाकपा (माले) (पीपुल्सवार) और माओइस्ट कम्युनिस्ट सेंटर आफ इंडिया (एमसीसीआई)

की विलय होकर भाकपा (माओवादी) का गठन हुआ। उन्नत सैद्धांतिक और राजनीतिक लाइन पर खड़ी होकर हुई इस विलय के साथ-साथ भारत की क्रांतिकारी आंदोलन ने एक बड़ी छलांग लगाया। यह परिणाम भारत की क्रांतिकारी आंदोलन में ही एक मील का पत्थर है। इसने पार्टी को और मजबूत और विस्तारित किया। दोनों पार्टियों की गुरिल्ला सेनाओं का विलय होकर मजबूत जनमुक्ति छापामार सेना के रूप में गठित हुई। 2004 तक देश में छोटे-छोटे झरनों के रूप में रही कई क्रांतिकारी ग्रुपों और व्यक्तियों का विलय पहले से क्रांतिकारी कम्युनिस्ट धाराओं के रूप में रही एमसीसीआई और भाकपा (माले) (पीपुल्सवार) में हुई। इन दोनों मुख्य धाराओं का विलय होकर भाकपा (माओवादी) के रूप में - एक बड़ी और महान प्रवाह के रूप में तब्दील हो गयी। इस तरह गठित भाकपा (माओवादी) में अत्यंत अनुभवी, कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां निभाने वाले एंव नक्सलबाड़ी पीढ़ी के नेता भी शामिल हैं। इस तरह के नेता और कतार वाली पार्टी के केंद्रीय कमेटी ने कामरेड गणपति को महासचिव चुन लिया। 2007 में आयोजित एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस के मौके पर भी केंद्रीय कमेटी ने उन्हीं को महासचिव चुन लिया। एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस के उपरान्त, केंद्रीय कमेटी के नेतृत्व में आंदोलन ने और नयी ऊंचाइयों को छू लिया। विकास के इस क्रम में ही, 2013 अंत में भाकपा (माले) (नक्सलबाड़ी) और भाकपा (माओवादी) के विलय के साथ-साथ कहा जा सकता है कि भारत वर्ष में क्रांतिकारी पार्टियों के एकीकरण की प्रक्रिया लगभग पूरी हो गयी।

कामरेड गणपति 1992 से 2017 तक 25 साल महासचिव की जिम्मेदारियां निभाने की इस पूरी समय में आंदोलन कई ज्वार-भाटों का सामना करते हुए केंद्रीय नेतृत्व में आगे बढ़ी है। तीखी वर्ग संघर्ष में फौलादी बन गयी है। दुश्मन द्वारा संचालित प्रतिक्रांतिकारी हमले को हराने के लिए क्रांतिकारी कतारों और क्रांतिकारी जनता को दृढ़तापूर्वक सर्वहारा का नेतृत्व प्रदान किया। इसी क्रम में कामरेड गणपति अपनी बढ़ती अस्वस्थता को पहचान कर, इसके साथ-साथ बढ़ते उम्र के साथ आने वाली सीमितताओं को ध्यान में रखकर, महासचिव पद से हटकर, केंद्रीय कमेटी को और मजबूत करने के लक्ष्य से हमेशा की तरह अपनी पूरी शक्ति-क्षमताओं को केंद्रीय कमेटी के साथ पूरी पार्टी की विकास हेतु इस्तेमाल करने के लिए तैयार हो गए। इसके बाद, केंद्रीय कमेटी ने अपने महासचिव के रूप में कामरेड बसवराजू (नंबाल्ला केशव राव) को चुन लिया। कामरेड बसवराजू साढ़े तीन दशक से ज्यादा पार्टी में अगली पंक्ति में खड़े होकर विभिन्न पार्टी कमेटियों के सचिव के रूप में, 27 सालों से ज्यादा केंद्रीय कमेटी के रूप में और पिछले 18 साल से पोलित ब्यूरो सदस्य के रूप में सफलतापूर्वक नेतृत्व प्रदान किए। खासकर, सैनिक क्षेत्र में केंद्रीय सैन्य आयोग के प्रभारी रहते हुए जनयुद्ध को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। और ठोस रूप से कहे तो 1992 के बाद सामूहिक नेतृत्व के रूप में विकसित केंद्रीय कमेटी में एक महत्वपूर्ण कामरेड के रूप में रहते हुए अभी महासचिव के रूप में विकसित हुए।

पार्टी की केंद्रीय कमेटी में हुए ये बदलाव पूरी पार्टी की विकास के क्रम का हिस्सा है। ये बदलाव केंद्रीय कमेटी को और शक्ति प्रदान करती हैं। समूची क्रांतिकारी पार्टी के कतारों और क्रांतिकारी जनता को केंद्रीय कमेटी वादा करती है कि वह पार्टी का सांगठनिक उसूल - जनवादी केंद्रीयता को, आत्मालोचना-आलोचना के उसूल को अमल करने में थोड़ी भी ढिलाई न बरतते हुए और दृढ़ता से अमल करते हुए, सामूहिक नेतृत्व को, पूरी पार्टी कतारों और क्रांतिकारी जनता को केंद्रीकृत नेतृत्व प्रदान करेगी है और फासीवादी तरीके से 'समाधान' के नाम पर संचालित दुश्मन के रणनीतिक प्रतिक्रांतिकारी हमले को जनदिशा-वर्गदिशा पर निर्भर होकर जनता को जनयुद्ध में गोलबंद कर, करती रहेगी और उस हमले को हराने और देश में नवजनवादी क्रांति की जीत के लिए सर्वहारा वर्ग की अगुवा दस्ता के रूप में खड़े होकर नेतृत्व प्रदान करती रहेगी।

अभय

अभय
प्रवक्ता
केन्द्रीय कमेटी
भाकपा(माओवादी)